2 अक्टूबर 2008, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-064 / 2006-08

जैन
पथप्रदर्शक
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

भगवान आत्मा की बात समझाना, भगवान आत्मा के दर्शन की प्रेरणा देना,अनुभव करने की प्रेरणा देना, आत्मा में ही समा जाने की प्रेरणा देना ही सच्चा प्रवचन है।

ह्न बिन्दु में सिन्धु : पृष्ठ ह्न 12

वर्ष : 31, अंक : 13 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये
अक्टूबर (प्रथम), 2008 प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

दशलक्षण महापर्व धूमधाम से मनाया गया

सार्वभौमिक एवं त्रैकालिक दशलक्षण महापर्व सम्पूर्ण देश-विदेश में दिनांक 4 सितम्बर से 14 सितम्बर, 2008 तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया। पर्व के दौरान सभी स्थानों पर मंदिरों में पूजन-विधान, प्रवचन, प्रौढ़ एवं बालकक्षाओं की धूम रही। लगभग सभी स्थानों पर सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से महती धर्म प्रभावना हुई। देश के कोने-कोने से प्राप्त समाचारों को यहाँ संक्षेप में प्रकाशित किया जा रहा है। जयपुर के समाचार विगत अंक में प्रकाशित हो चुके हैं।

1. मुम्बई : यहाँ भारतीय विद्या भवन में पर्व के अवसर पर श्री सीमन्धर जिनालय के तत्त्वावधान में प्रतिदिन प्रात: ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के समयसार का सार पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। अन्तिम दिन शंका-समाधान का कार्यक्रम रखा गया, जिसमें डॉ.भारिल्ल द्वारा तार्किक शैली में श्रोताओं की जिज्ञासाओं का समाधान किया गया।

आपके प्रवचनों के पूर्व पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री राजकोट के प्रवचन हुये साथ ही रात्रि में सीमंधर जिनालय में भी ज्ञायकजी के प्रवचनों का लाभ मिला।

ज्ञातव्य है कि पर्व के अवसर पर डॉ. भारिल्ल कृत **समयसार का सार** एवं **पण्डित टोडरमल : व्यक्तित्व कर्तृत्व** नामक पुस्तकें नि:शुल्क वितरित की गई। तथा डॉ. भारिल्ल की २०,३१२ घण्टों की डी.वी.डी./सी.डी. घर-घर पहुँची।

२. कोटा (राज.) : यहाँ श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल एवं जैन युवा फैडरेशन, रामपुरा के तत्त्वावधान में आयोजित दशलक्षण महापर्व पर पण्डित राजेन्द्रकुमारजी, जबलपुर पधारे। यहाँ आपके माध्यम से प्रात: प्रवचनसार की ८० वीं गाथा, मध्यान्ह मोक्षमार्ग प्रकाशक एवं सायंकाल रत्नकरण्ड श्रावकाचार के आधार से हुये प्रवचनों का लाभ मिला।

क्षमावाणी महापर्व पर आपका विशेष प्रवचन हुआ। दिनांक १३ सितम्बर को जैन युवा फैडरेशन कोटा के युवा साथियों को आपका प्रेरक उद्बोधन एवं दिशा निर्देशन मिला। इस अवसर पर बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' के सानिध्य में गहन आध्यात्मिक तत्त्वचर्चा का लाभ भी मिला। **ह्न चिन्मय जैन**

3. रतलाम (म. प्र.) : यहाँ श्री आदिनाथ जिनालय में समाज के अध्यक्ष श्री राजकुमारजी अजमेरा के विशेष आग्रह पर पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा पधारे।

यहाँ प्रात: पूजन-विधान के पश्चात् पण्डितजी के समयसार ग्रन्थाधिराज की 3, 4, 199 व 200 गाथाओं पर प्रवचन हुये। दोपहर में मोक्षमार्गप्रकाशक और नियमसार पर तथा रात्रि में दशलक्षण धर्म, रत्नकरण्ड श्रावकाचार, कार्तिकेयानुप्रेक्षा, पद्मनंदि पंचविंशतिका आदि विषयों पर आपके प्रवचन हुये।

आपने नियमसार की विभिन्न गाथाओं पर कक्षायें लीं।

4. कोलकाता : यहाँ पद्मोपुकुर रोड़ स्थित श्री दिगम्बर जैन मंदिर में श्री टोडरमल महाविद्यालय के उपप्राचार्य पण्डित शांतिकुमारजी पाटील पधारे।

आपके प्रात: समयसार के कर्त्ताकर्माधिकार पर एवं रात्रि में कार्तिकेयानुप्रेक्षा के आधार से दशधर्मों पर व्याख्यान हुये। इस अवसर पर प्रतिदिन प्रात: कर्मदहन विधान पण्डित कांतिलालजी जैन इन्दौर के निर्देशन में सम्पन्न हुआ। पूज्य गुरुदेवश्री के सी. डी. प्रवचन एवं सायंकाल स्थानीय विद्वान पण्डित प्रकाशभाई शहा के प्रवचनों का भी लाभ मिला। पण्डित अनीश जैन छिन्दवाड़ा ने दोपहर में कक्षा एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये। **ह्न हर्षदभाई शहा**

५. इन्दौर (म. प्र.) : यहाँ पर्व के प्रसंग पर दिनांक २ सितम्बर से १७ सितम्बर तक ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियाधांना के दशधर्मों एवं जैनधर्म के मूल सिद्धांतों पर हुये प्रवचनों का लाभ मिला।

इसी अवसर पर पलासिया स्थित कुन्दकुन्दकहान स्वाध्याय भवन में ब्र. अमितजी मोदी विदिशा के तीनों समय तत्त्वार्थसूत्र व समयसार पर हुये प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ। **ह्न विजय बड़जात्या एवं मनोहरलाल काला**

6. कोलारस (म.प्र.) : यहाँ श्री आदिनाथ जिनालय में प्रात: पंचपरमेष्ठी विधान एवं दसलक्षण विधान के पश्चात् पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री जयपुर के मोक्षमार्ग प्रकाशक पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। सायंकाल आपके धर्म के दशलक्षण पर सारगर्भित प्रवचन हुये। आपके अतिरिक्त चन्द्रप्रभ जिनालय में पण्डित अनुरागजी शास्त्री भगवाँ द्वारा तीनों समय तत्त्वार्थसूत्र, छहढाला एवं दसलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला। ज्ञातव्य है कि पर्व के दौरान एक दिन पण्डित पीयूषजी शास्त्री के **लुकवासा** में भी प्रवचनों का लाभ मिला।

7. सागर (म.प्र.) : यहाँ प्रतिदिन प्रात: दसलक्षण विधान के पश्चात् पण्डित प्रवीणकुमारजी शास्त्री जयपुर के विधान की जयमाला एवं समयसार पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र का अर्थ एवं तीन लोक पर विशेष कक्षा का आयोजन हुआ। रात्रि में वैराग्य प्रेरक विभिन्न विषयों पर प्रवचन हुये। प्रवचनों के पूर्व बालकक्षा चली। **(शेष पृष्ठ-३ पर ....)**

सम्पादकीय - 15

चलते-फिरते सिद्धों से गुरु

ह्न पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे ...)

जिन जीवों ने मुक्ति प्राप्त करानेवाले सम्यग्दर्शन को स्वप्न में भी मलिन नहीं किया; वे ही धन्य हैं, कृतार्थ हैं, शूरवीर हैं, पण्डित हैं। तात्पर्य यह है कि सभी गुण सम्यग्दर्शन से ही शोभा पाते हैं। अतः हमें निर्मल सम्यग्दर्शन धारण करना चाहिए। स्वप्न में भी ऐसा कार्य नहीं करना चाहिए, जिससे सम्यग्दर्शन में मलिनता उत्पन्न हो।अधिक कहने से क्या लाभ है, इतना समझ लो कि आज तक जो जीव सिद्ध हुए हैं और भविष्यकाल में होंगे, वह सब सम्यग्दर्शन का ही माहात्म्य है। तात्पर्य यह है कि सम्यग्दर्शन के बिना न तो आज तक कोई सिद्ध हुआ है और न भविष्य में होगा।

ज्ञानी को सम्यग्दर्शनसहित नरक में रहना पड़े तो भी वह उसे अच्छा मानता है, परन्तु सम्यग्दर्शन के बिना स्वर्ग निवास को भी भला नहीं मानता। इसका कारण यह है कि सम्यग्दृष्टि जीव नरक में से निकलकर, सम्यग्दर्शन के माहात्म्य से समस्त पूर्वोपार्जित अशुभकर्मों का नाश करके, तीर्थंकर तक हो सकता है, परन्तु बिना सम्यग्दर्शन, दूसरे स्वर्ग तक के देव आर्त्तध्यान करते हैं और मिथ्यात्व के कारण स्वर्ग से आकर स्थावरों में उत्पन्न हो जाते हैं।

जो पुरुष सम्यग्दर्शन से सुशोभित हैं, वे अव्रती होने पर भी नरकगति, तिर्यंचगति, निन्दित कुल, स्त्री पर्याय, नपुंसक पर्याय आदि में उत्पन्न नहीं होते। वे धर्मात्मा विकल या अंग-भंग शरीर धारण नहीं करते। उनका कुजन्म नहीं होता, वे अल्पायु और दरिद्री नहीं होते, धर्म-अर्थ-काम पुरुषार्थ से रहित नहीं होते, शुभभावों से रहित नहीं होते, वे रोगी व पापी भी नहीं होते और मूर्ख नहीं होते।

सम्यग्दृष्टि पुरुष ज्योतिषी, भवनवासी, व्यन्तर देवों में पैदा नहीं होते। प्रकीर्णक, आभियोग्य देवों में उत्पन्न नहीं होते। जहाँ पर निन्दनीय भोगोपभोग की सामग्री प्राप्त होती है, वहाँ कहीं भी उत्पन्न नहीं होते। कुभोग भूमि में भी उत्पन्न नहीं होते।

पण्डित दौलतरामजी ने कहा है ह्न

'प्रथम नरक विन षट् भू ज्योतिष वान भवन षंड नारी।
थावर विकलत्रय पशु में नहिं, उपजत सम्यक् धारी।।
तीन लोक तिहुँ काल माँहि नहिं, दर्शन सो सुखकारी।
सकल धर्म को मूल यही, इस बिन करनी दुखकारी।।'

सम्यग्दर्शन की महिमा से अभिभूत हुए श्रोताओं में सम्यग्दर्शन का स्वरूप और उसकी प्राप्ति का उपाय जानने की जिज्ञासा जागृत हो गई। एतदर्थ उन्होंने आचार्यश्री से सम्यग्दर्शन समझाने का निवेदन किया कि ह्न ''हे स्वामिन! हमने पहले भी सुना था कि ह्न सम्यग्दर्शन के बिना धर्म की शुरुआत ही नहीं होती, परन्तु तब हमने ध्यान नहीं दिया; अब आप कृपया इस विषय को विस्तार से बतायें।''

रविवार छुट्टी का दिन था, बाजार भी बंद रहने के कारण अनेक पढ़े-लिखे प्रोफेसर, इंजीनियर, डाक्टर एवं प्रशासन सेवा में रहने वाले प्रतिभाशाली महानुभाव, प्रौढ़, छात्र-छात्रायें आदि नये श्रोता भी सम्यग्दर्शन का स्वरूप सुनने के लिए समय से पूर्व ही आ गये।

अनेक जिज्ञासु श्रोता तो ऐसे थे जो जैन कुल में पैदा होने के कारण नाम मात्र के जैन थे। वे कुलक्रम से प्राप्त जैनधर्म के संस्कारोंवश प्रति रविवार को ही देवदर्शन करने आया करते थे। वे भी माता-पिता की प्रेरणा से आचार्यश्री के प्रवचन में बैठ गये थे।

आचार्यश्री अनेक नये चेहरों को देखकर कुछ असमंजस में पड़ गये। उन्हें विकल्प आया कि ह्न जब साठ हजार वर्ष तक छह खण्ड को जीतने के लिए निकले अभागे भरत चक्रवर्ती को तत्त्वज्ञान देने के लिए तीर्थंकर ऋषभदेव की दिव्यध्वनि अर्द्धरात्रि में खिर सकती है तो इन सौभाग्यशाली अभागे श्रोताओं को समझाना तो है ही, पर क्या/कैसे समझाया जाय ताकि इनमें चार माह तक नियमित प्रवचन सुनने की जिज्ञासा जागृत हो जाय; परन्तु वे घोषित विषय को बदलना भी नहीं चाहते थे। अतः आचार्य श्री ने नये श्रोताओं को ध्यान में रखते हुए सर्वप्रथम जीवों के अनादि-अनन्त अस्तित्व होने का तथा पुण्य-पाप की सत्ता का ज्ञान कराना बेहतर समझा। अतः उन्होंने श्रोताओं से कहा ह्न मैं एक प्रश्न पूछता हूँ सब ध्यान से सुनें और जिससे पूछा जाये वही उत्तर दें।

एक बालक राजमहल में या किसी अरब पति सेठ के यहाँ पैदा होता है, जन्म से ही उसके मुँह में सोने की चम्मच होती है और चाँदी के पालने में झूलता है। नौकर-चाकर सब सेवा में खड़े रहते हैं, वहीं दूसरा बालक फुटपाथ पर पैदा होता है और लड़खड़ाते पैरों से चलने लायक होते ही उसके हाथ में भीख का कटोरा होता है, अभाव में जीवनभर जीता है और अनेक बीमारियों से घिरा तड़फ-तड़फ कर फुटपाथ पर ही दम तोड़ देता है। इन दोनों में यह अन्तर क्यों? दो सगे भाई एक ही माँ के उदर में पैदा होकर एक कलक्टर बन जाता और दूसरा चपरासी बन कर क्यों रह जाता है? सोचा कभी?

अधिकांश श्रोता सोच में पड़ गये, पर एक बालक ने हाथ उठाया।

आचार्यश्री ने उसे खड़ा किया और उत्तर देने को कहा। बालक ने कहा ह्न ''जिस बालक ने अपने पिछले जन्म में जैसा पुण्य-पाप कमाया, उसके अनुसार ही उसे फल मिला।''

उत्तर सुन कर आचार्यश्री ने प्रसन्नता से कहा ह्न हम सबकी परिस्थितियाँ भी एक जैसी कहाँ हैं? यहाँ जितने लोग बैठे हैं, सब किसी न किसी मनःस्थिति और आर्थिक परिस्थिति से जूझ रहे हैं। यह भी हमारे पूर्वकृत पुण्य-पाप का ही फल है ह्न ऐसा विचार करने से समता आती है। **(क्रमशः)**

(दसलक्षण समाचार पृष्ठ–१ का शेष ....)

८. दिल्ली : यहाँ 'अध्यात्मतीर्थ' आत्मसाधना केन्द्र पर दशलक्षण मण्डल विधान का आयोजन किया गया। इस प्रसंग पर प्रात: पण्डित कस्तूरचंदजी भोपाल के समयसार पर तथा सायंकाल पण्डित अनिलजी शास्त्री कानपुर के लघुतत्त्वस्फोट पर हुये प्रवचनों के अतिरिक्त विदुषी राजकुमारीजी द्वारा छहढाला पर ली गई विशेष कक्षाओं का भी लाभ मिला।

इसके अतिरिक्त आत्मसाधना केन्द्र पर संचालित आत्मार्थी कन्या विद्यानिकेतन की प्रत्येक छात्रा के प्रतिदिन धर्म के दशलक्षण विषय पर प्रवचन हुये साथ ही अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किये गये।

९. टीकमगढ़ (म. प्र.) : यहाँ पर्व के अवसर पर पण्डित राजीवजी शास्त्री भिण्ड पधारे। आपके तीनों समय भक्तामर, छहढाला एवं दशलक्षण धर्मों पर हुये प्रवचनों का लाभ समाज को मिला। आपके अतिरिक्त स्थानीय ब्र. मीना बहिन के प्रवचनों का भी लाभ मिला। इस प्रसंग पर लगभग १८००० रुपयों का सत्साहित्य जन–जन तक पहुँचाया गया।

१०. छिन्दवाड़ा (म. प्र.) : यहाँ अहिंसा स्थली **गोलगंज** स्थित श्री आदिनाथ जिनालय में शिवपुरी से पधारे ब्र. सुनीलजी शास्त्री द्वारा प्रात: ग्रंथाधिराज समयसार, दोपहर में एकीभाव स्तोत्र व रात्रि में रत्नकरण्ड श्रावकाचार के माध्यम से निजशुद्धात्मा एवं दशधर्मों का स्वरूप सरल एवं मधुर शैली में समझाया गया।

इसी अवसर पर नई आबादी **गाँधी गंज** के पार्श्वनाथ जिनालय में प्रात: गुरुदेवश्री के सी.डी.प्रवचनोपरान्त पण्डित सुमितजी वैभव मंगलायतन ने सात तत्त्वों के स्वरूप पर विशेष कक्षा संचालित की ।

रात्रि में भक्ति के पश्चात् बालकक्षायें चलीं तथा अनेक सांस्कृतिक प्रतियोगितायें भी आयोजित की गईं, जिनके प्रतिभागियों को मुमुक्षु मण्डल एवं युवा फैडरेशन की ओर से सम्मानित किया गया। **ह्न दीपकराज जैन**

११. सोड़ा का कुआ (म.प्र.) : यहाँ पर्व के अवसर पर श्री वासुपूज्य दिगम्बर जैन मंदिर में पण्डित सुरेशचंदजी जैन टीकमगढ़ के प्रात: नियमसार, दोपहर में मोक्षमार्गप्रकाशक एवं रात्रि में दशधर्मों पर हुये मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला।

१२. दिल्ली (ओल्ड राजेन्द्रनगर) : यहाँ पण्डित प्रयंकजी शास्त्री रहली के निर्देशन में दशलक्षण मंडल विधान का आयोजन किया गया। साथ ही रात्रि में जिनेन्द्र भक्ति के पश्चात् दशधर्मों पर हुये प्रवचनों का लाभ भी समाज को मिला। प्रवचनोपरान्त जैन जागृति महिला मंडल के माध्यम से अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये गये। अंतिम दिन भव्य कलश शोभायात्रा निकाली गई।

१३. दिल्ली (इन्द्रपुरी) : यहाँ पर्व के अवसर पर पण्डित अमितजी शास्त्री फुटेरा द्वारा दशलक्षण मंडल विधान का आयोजन किया गया एवं रात्रि में धर्म के दशलक्षण विषय पर सारगर्भित प्रवनचन हुये।

१४. दिल्ली (पीरागढ़ी) : यहाँ पण्डित आशीषजी शास्त्री मौ के निर्देशन में दशलक्षण मंडल विधान का आयोजन किया गया एवं रात्रि में आपके भक्तामर स्तोत्र एवं धर्म के दशलक्षण विषय पर प्रवचन हुये।

१५. दिल्ली (पटपड़गंज) : यहाँ पण्डित जितेन्द्रजी शास्त्री सिंगोड़ी के दशलक्षण विषय पर हुये प्रवचनों का लाभ समाज को मिला। इसके अतिरिक्त रात्रि में बालकक्षा भी चलाई गई।

१६. पोरसा : यहाँ पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री 'ओजस्वी' के प्रात: सच्चे देव के स्वरूप व सायंकाल दशलक्षण धर्म पर हुये प्रवचनों का लाभ मिला एवं युवाओं हेतु '**जैनधर्म महान है।**' विषय पर विशेष कक्षा भी चलाई गई। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम पण्डित अभिषेकजी शास्त्री, बाँसवाड़ा के सहयोग से सम्पन्न हुये। **ह्न इन्द्रसेन जैन, अध्यक्ष**

१७. थोणे (जयसमन्द) : यहाँ डॉ. ममता जैन व पण्डित संजयजी जैन, धुव्रधाम के माध्यम से जैनधर्म की सामान्य जानकारी प्रदान की गई तथा विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये गये।

१८. बाँसवाड़ा (राज.) : यहाँ पण्डित नितुलकुमारजी शास्त्री द्वारा प्रात: सामान्य गुणों के आधार से तत्त्वचर्चा की गई तथा रात्रि में आपके दशलक्षण धर्म पर हुये प्रवचनों का लाभ मिला। रात्रि मं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन पण्डित महीपालजी'ज्ञायक' के निर्देशन में किया गया।

१९. अजमेर (राज.) : यहाँ पर्व के अवसर पर दशलक्षण मंडल विधान का आयेाजन किया गया। इस प्रसंग पर पण्डित गुलाबचंदजी बीना के प्रात: समयसार, दोपहर में मोक्षमार्ग प्रकाशक एवं रात्रि में दशधर्मों के आधार से हुये प्रवचनों का लाभ मिला। रात्रि में विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम श्री प्रकाशचंदजी पांड्या एवं श्री मनोजजी कासलीवाल के सहयोग से सम्पन्न किये गये। विधि–विधान के समस्त कार्यक्रम पण्डित अश्विनजी नानावटी के निर्देशन में सम्पन्न हुये।रत्नत्रय व्रत के उपलक्ष में ट्रस्टी श्रीमती आशाजी लुहाड़िया ध.प. श्री नरेशजी लुहाड़िया द्वारा समस्त श्रावक श्राविकाओं को भक्ति सरोवर की सी.डी. भेंट की गई।

२०. गढ़ाकोटा (म.प्र.) : यहाँ पर्व के अवसर पर पण्डित सुरेशचंदजी भिण्ड के प्रात: मोक्षमार्गप्रकाशक, दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर हुये प्रवचनों का लाभ मिला। रात्रि में विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम स्थानीय विद्वान पण्डित सचिनजी शास्त्री ने कराये।

२१. अंबड़ (महा.) : यहाँ पण्डित संतोषजी शास्त्री के तत्त्वार्थ सूत्र एवं दशलक्षण धर्म पर हुये प्रवचनों का लाभ मिला आपके अतिरिक्त पण्डित अभिषेकजीजोगी द्वारा बालकक्षा ली गई एवं रात्रि में विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये गये। सम्पूर्ण कार्यक्रम विदर्भ तत्त्वप्रचार–प्रसार समिति व श्री महावीर नवयुवक मंडल के सहयोग से सम्पन्न हुये।

२२. ललितपुर (उ. प्र.) : यहाँ पण्डित कांतिकुमारजी पाटनी इन्दौर के प्रात: मोक्षमार्ग प्रकाशक, दोपहर में तत्त्वार्थ सूत्र एवं रात्रि में रत्नकरण्ड श्रावकाचार के माध्यम से दशलक्षण धर्म पर हुये प्रवचनों का लाभ मिला।

२३. मंदसोर (म. प्र.) : यहाँ पण्डित मिश्रीलालजी जैन केकड़ी के समयसार ग्रंथाधिराज पर हुये प्रवचनों का लाभ मिला।

२४. वस्त्रापुर ह्न अहमदाबाद (गुज.) : यहाँ ब्र. समताबेन झाँझरी उज्जैन के नाटक समयसार एवं रत्नकरण्ड श्रावकाचार पर प्रवचन हुये साथ ही ब्र. ज्ञानधारा झाँझरी उज्जैन द्वारा बच्चों की पाठशाला एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये गये।

दिनांक ८ सितम्बर को जैनधर्म पर प्रदर्शनी का विशेष आयोजन किया गया, जिसका उद्घाटन राजेशभाई झवेरी अहमदाबाद ने किया। प्रदर्शनी की अहमदाबाद के समस्त मुमुक्षु मंडलों ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की।

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेश

बुन्देलखंड के तीर्थक्षेत्रों कि

(रविवार, 7 दिसम्बर 2008 से र

अखिल भारतीय जैन युवा फैडेरशन द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर पहली बार वीतराग–विज्ञा दिसम्बर, 08 से 14 दिसम्बर, 08 तक किया जा रहा है।

तीर्थ यात्रा का कार्यक्रम :– दिनांक 7 एवं 8 दिसम्बर को सोनागिरि में शिविर, 9 दि दिनांक 10 दिसम्बर को खंदारगिरी, थूवोनजी, बरौदास्वामी, सीरोनजी होते हुये पपौराजी में ही पुनः रात्रि विश्राम, दिनांक 12 दिसम्बर को आहारजी, खजुराहो एवं डेरा पहाडी (छ कुण्डलपुर की यात्रा करके रात्रि विश्राम हेतु पुनः द्रोणगिरि तथा 14 दिसम्बर को द्रोणगि

* डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल एवं अन्य विशिष्ट विद्वानों का समागम।
* यात्रा 2 X 2 पुश–बैक, लग्जरी बस द्वारा होगी।
* गुजराती/उत्तर भारतीय स्वाद के अनुसार भोजन की लग्जरी व्यवस्था ।
* मात्र 300 लोगों को ही यात्रा हेतु ले जाने की व्यवस्था है।
* मात्र 7 दिनों में 19 तीर्थक्षेत्रों के लगभग 307 जिनालयों की वंदना।
* यात्रा के प्रारंभ में सभी यात्रियों को आकर्षक यात्रा किट दी जायेगी।

बुकिंग चालू है, सीटें पहले आओ–पहले पाओ के आधार पर दी जावेगी। 4500 व है। भूतपूर्व छात्रों को किराये में 1000-1000 रुपये की छूट संघपति की ओर से मिलेगी

संपर्क

मैनेजर, अखिल भारतीय जैन युवा

(0141) 2707458 / 2705581,

पीयूष जैन ह्न 09413347829,

न द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर पहली बार

ी यात्रा का भव्य आयोजन

विवार, 14 दिसम्बर 2008 तक)

न यात्रा संघ के माध्यम से बुन्देलखंड के तीर्थक्षेत्रों की तीर्थयात्रा का भव्य आयोजन 7

दिसम्बर को करगुंवाजी, पवाजी, गोलाकोट, खनियांधाना होते हुये चंदेरी में रात्रि विश्राम, ी में रात्रि विश्राम, दिनांक 11 दिसम्बर को बानपुर, देवगढ़, ललितपुर होते हुये पपौराजी छतरपुर) की वंदना करके रात्रि विश्राम द्रोणगिरी में, दिनांक 13 दिसम्बर को नैनागिर एवं रि की वन्दना एवं यात्रा का समापन।

* यथा संभव सभी स्थानों पर प्रवचन, पूजन–विधान, भक्ति आदि कार्यक्रम आयोजन।
* राशि : 4500/– प्रति व्यक्ति, 8 वर्ष तक के बालक फ्री (सीट नहीं मिलेगी)।
* उपलब्धता के अनुसार आवास की उत्तम व्यवस्था।
* फैडरेशन के सदस्यों को प्राथमिकता।
* यात्रियों को झाँसी व दतिया से लेने व झांसी पहुँचाने की व्यवस्था है।
* यात्रा के पश्चात् यात्रा की फोटो व वीडियो सी.डी. सभी यात्रियों को दी जायेगी।

का ड्राफ्ट भेजकर अपनी बुकिंग कन्फर्म करें। बुकिंग की अंतिम तिथि ह्न 14 अक्टूबर, 08 ।

र्क ह्न

फैडरेशन, ए ह्न 4, बापूनगर, जयपुर

अरुणोश जैन ह्न 09828111992,

धर्मेन्द्र शास्त्री ह्न 09414717823

मोक्षमार्ग प्रकाशक का सार 7

तीसरा प्रवचन

– डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

विषयों का ग्रहण करने पर उसके मरण होता था, विषयसेवन नहीं करने पर इन्द्रियों की पीड़ा अधिक भासित होती है।

इन इन्द्रियों की पीड़ा से पीड़ितरूप सर्व जीव निर्विचार होकर जैसे कोई दुःखी पर्वत से गिर पड़े, वैसे ही विषयों में छलाँग लगाते हैं। नाना कष्ट से धन उत्पन्न करते हैं, उसे विषय के अर्थ खोते हैं। तथा विषयों के अर्थ जहाँ मरण होना जानते हैं, वहाँ भी जाते हैं। नरकादि के कारण जो हिंसादिक कार्य, उन्हें करते हैं तथा क्रोधादि कषायों को उत्पन्न करते हैं।

वे करें क्या? इन्द्रियों की पीड़ा सही नहीं जाती; इसलिये अन्य विचार कुछ आता नहीं। इसी पीड़ा से पीड़ित हुए इन्द्रादिक हैं; वे भी विषयों में अति आसक्त हो रहे हैं। जैसे खाज-रोग से पीड़ित हुआ पुरुष आसक्त होकर खुजाता है, पीड़ा न हो तो किसलिये खुजाये; उसीप्रकार इन्द्रिय रोग से पीड़ित हुए इन्द्रादिक आसक्त होकर विषय सेवन करते हैं। पीड़ा न हो तो किसलिये विषय सेवन करें?

इसप्रकार ज्ञानावरण-दर्शनावरण के क्षयोपशम से हुआ इन्द्रियजनित ज्ञान है, वह मिथ्यादर्शनादि के निमित्त से इच्छा सहित होकर दुःख का कारण हुआ है।

जब ज्ञानावरण के क्षय से केवलज्ञान हो जाता है; तब अरहंत-सिद्ध अवस्था में जानना तो सम्पूर्ण लोकालोक का हो जाता है और जानने की इच्छा रहती नहीं; यही कारण है कि अरहंत-सिद्ध अनन्त सुखी हैं।

वहाँ अनन्तकाल तक सुखी रहने की दुहरी (डबल) व्यवस्था है। छद्मस्थ अवस्था में इच्छा तो सबको जानने की थी और जानना बहुत कम होता था और केवलज्ञान होने पर जानने की इच्छा समाप्त हो गई और जानना सबका हो गया। अतः अब दुःख होने का कोई कारण ही नहीं रहा। दुःख का कारण तो एकमात्र इच्छा थी, उसके कारण ही नहीं जानने रूप अज्ञान दुःख का कारण बन रहा था। अब इच्छा रही नहीं और जानना सम्पूर्ण जगत का हो गया। अतः अब तो सुख ही सुख है।

वस्तुतः बात यह है कि अनेक प्रकार की इच्छाओं वाले परोक्ष ज्ञानी सुखी नहीं हो सकते।

इस तथ्य का चित्र प्रस्तुत करते हुये राष्ट्रकवि मैथिलीशरणजी गुप्त 'पंचवटी' नामक पुस्तक में लिखते हैं कि ह्न वनवास के अवसर पर पंचवटी की एक कुटिया में राम और सीता सुख से सो रहे थे और लक्ष्मण बाहर पहरा दे रहे थे। मन्द-मन्द सुगन्धित हवा चल रही थी और स्वच्छ चाँदनी अपनी आभा बिखेर रही थी।

मध्यरात्रि में प्रकृति की सुन्दरतम छटा से आनंदविभोर लक्ष्मण सोचते हैं कि हम यहाँ कितने मजे में हैं, प्रसन्न हैं और प्रकृति माँ की गोद में प्रफुल्लित हो रहे हैं; परन्तु दुःख इस बात का है कि हमारे इस आनन्द को हमारी मातायें नहीं जानती और वे यह सोच-सोचकर दुःखी हो रहीं होंगी कि हम वन में न जाने कितने कष्ट में होंगे?

राजमहल में न उन्हें कोई कष्ट है और न हमें इस मंगलमय जंगल में कोई असुविधा है। इसप्रकार दोनों ओर अनुकूलता होने पर भी, सुख-सुविधा होने पर भी, दोनों ही एक-दूसरे के दुःखी होने की कल्पना मात्र को दुखी हो रहे हैं; क्योंकि हम दोनों एक दूसरे की अनुकूलता को नहीं जानते। परोक्षज्ञान का यही तो दोष है।

अरे भाई ! हमारा ज्ञान भी इन्द्रियाधीन हो रहा है और हमारा सुख भी इन्द्रियाधीन हो रहा है; हमें न तो अतीन्द्रियज्ञान है और न अतीन्द्रियसुख। यही कारण है कि मोह की विद्यमानता से ज्ञान का परोक्षपना, पराधीनपना हमारे लिये अनन्तदुःख का कारण बना है।

यद्यपि यह परम सत्य है कि ज्ञानावरण के उदय से जो नहीं जाननेरूप औदायिक अज्ञान होता है, वह कर्मबंध का कारण नहीं है; तथापि मोहोदय के साथ होने वाला क्षायोपशमिक अज्ञान-मिथ्याज्ञान अनन्त-दुःख का कारण बन रहा है। मोहोदय से जानने की इतनी तीव्र इच्छा होती है कि मौत की कीमत पर भी यह सबकुछ जान लेना चाहता है। **(क्रमशः)**

क्षमावाणी एवं विद्वत् सम्मान समारोह सम्पन्न

नई दिल्ली : यहाँ आत्म साधना केन्द्र में १५ सितम्बर को क्षमावाणी पर्व पर श्री शांतिलाल जितेन्द्र सेठिया परिवार द्वारा झण्डारोहण किया गया।

इस अवसर पर गुरुदेवश्री के सी. डी. प्रवचनोपरान्त कन्या विद्यानिकेतन की छात्रा कु. पूर्ति जैन के क्षमावाणी पर्व पर हुये प्रवचन के साथ ही पण्डित कस्तूरचंदजी भोपाल के प्रवचन का भी लाभ मिला।

सभा में पण्डित प्रयंकजी शास्त्री रहली ने ट्रस्ट की गतिविधियों पर प्रकाश डाला एवं पण्डित मनीषजी शास्त्री खनियांधाना, विदुषी राजकुमारीजी तथा पण्डित संजीवजी जैन उस्मानपुर ने क्षमावाणी पर अपने विचार व्यक्त किये।

इस प्रसंग पर सम्पूर्ण दिल्ली में प्रवचनार्थ गये हुये लगभग ४५ शास्त्री विद्वानों का अभिनन्दन श्री विमलकुमारजी जैन परिवार ने किया।

(क्र

पधारिये ! तीन लोक के तीरथ जहाँ, नित प्रति वन्दन कीजे तहाँ। अवश्य पधारिये !!

आध्यात्मिक सत्पुरुष गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सातिशय शासन प्रभावना योग में मध्य प्रदेश की महानगरी इन्दौर की धरातल पर विश्व की सर्व प्रथम अनुपम रचना

तीर्थधाम ढाई द्वीप जिनायतन एवं स्वाध्याय भवन का मंगल शिलान्यास समारोह

(रविवार, दिनांक 2 नवम्बर, 2008 को प्रात: 7.30 बजे से)

सद्धर्मप्रेमी बन्धुवर,

हमें यह सूचित करते हुये अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि मध्यप्रदेश की महानगरी इन्दौर की धरातल पर विश्व की सर्वप्रथम अद्वितीय रचना ढाई द्वीप जिनालय का निर्माण होने जा रहा है। यह रचना **65000** वर्ग फीट की विशाल भूमि पर केवल भगवान द्वारा प्रतिपादित एवं वीतरागी दिगम्बर सन्तों द्वारा प्रचारित आगम ग्रन्थों के आधार पर अत्याधुनिकतम तकनीक द्वारा निर्मित हो रही है। इसमें ढाई द्वीप की अधिकतम रचनाओं को यथा संभव आगम प्रमाण में निर्मित किया जायेगा।

ढाई द्वीप की रचना में तीस चौबीसी, विद्यमान बीस तीर्थंकर एवं **50** फीट ऊँचे पाँच मेरु पर्वतों का निर्माण किया जायेगा।

शिलान्यास विधि के भव्य समारोह में देश–विदेश के ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, विद्वत्रत्न पण्डित ज्ञानचन्दजी जैन, डॉ. उत्तमचन्दजी जैन, पण्डित विमलदादा झांझरी, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा, पण्डित दिनेशभाई शहा, पण्डित कोमलचन्दजी टड़ा, ब्र. हेमचन्दजी हेम, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी, पण्डित मधुकरभाई आदि विद्वानों का सान्निध्य एवं समागम प्राप्त होगा।

इस प्रसंग पर **विषय विशेषज्ञ** के रूप में पण्डित रतनलालजी शास्त्री इन्दौर, डॉ. उज्ज्वलाबेन शहा मुम्बई, पण्डित रमेशचन्दजी बांझल इन्दौर, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर एवं पण्डित प्रकाशचन्दजी छाबड़ा (यू.एस.ए) इन्दौर भी उपस्थित रहेंगे।

शिलान्यास समारोह के अवसर पर राजकोट से पण्डित सुनीलजी जैनापुरे के निर्देशन में विशेषरूप से 40 बालक–बालिकाओं द्वारा तैयार की गई संगीतमय नाटिका '**अहो ढाई द्वीप**' का मंचन होगा तथा ढाई द्वीप पर श्री प्रकाशजी छाबड़ा यू.एस.ए. द्वारा निर्मित फिल्म दिखाई जायेगी ।

समारोह में आप सभी साधर्मी भाई–बहनों को पधारने हेतु हमारा भावभीना आमंत्रण है।

कार्यक्रम की रूपरेखा

प्रात:	7.30 से 8.30 बजे	:	जिनबिम्ब स्थापना एवं जिनेन्द्र पूजन
	8.30 से 9.00 बजे	:	स्वल्पाहार
	9.00 से 9.45 बजे	:	प्रवचन (डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा)
	9.45 से 11.30 बजे	:	शिलान्यास सभा
	11.30 से 12.30 बजे	:	शिलान्यास विधि

कार्यक्रम स्थल ह्न ढाई द्वीप जिनायतन, कुन्दकुन्द नगर, ग्राम–नैनौद, गोम्मटगिरि हातोद रोड, इन्दौर

नोट – समारोह स्थल रेल्वे स्टेशन एवं बस स्टैण्ड से 10 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है, जहाँ किसी भी साधन से पहुँचने में मात्र 20 मिनिट का समय लगता है। आवागमन हेतु पर्याप्त साधन उपलब्ध है। किसी भी प्रकार की समस्या होने पर आप मो. नं. 09301137411 पर श्री दिनेश शाह/श्री सुरेन्द्र जैन से सम्पर्क कर सकते हैं। * आपके आवास एवं भोजन की समुचित व्यवस्था है। आप कब और किस साधन से आ रहे हैं, कृपया पूर्व सूचना देवें, ताकि तदनुसार व्यवस्था की जा सके।

आयोजनकर्त्ता – श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन शासन प्रभावना ट्रस्ट, इन्दौर

मश:)

2 अक्टूबर 2008, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-064 / 2006-08

शोक समाचार

१. भोपाल निवासी श्री रतनलालजी सोगानी का दिनांक १६ सितम्बर को ८० वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। आप पिछले बीस वर्षों से मुमुक्षु मण्डल भोपाल के अध्यक्ष होने के साथ-साथ अनेक धार्मिक-सामाजिक संस्थाओं के पदाधिकारी थे। मुमुक्षु समाज के कार्यक्रमों में आपका सदैव सक्रिय सहयोग रहता था।

२. बुलंदशहर निवासी श्री शीतलप्रसादजी जैन का दिनांक २६ सितम्बर, ०८ को देहावसान हो गया। आप मंगलातनह्नअलीगढ़ के निर्देशक श्री पवनजी जैन के बड़े भाई थेसाथ ही तीर्थधाम मंगलायतन ह्न अलीगढ़ ट्रस्ट के अध्यक्ष एवं दिल्ली पब्लिक स्कूल तथा मंगलायतन यूनिवर्सिटी के प्रमोटर थे। आप अच्छे स्वाध्यायी थे। मुमुक्षु समाज की गतिविधियों में आपका सदैव सक्रिय सहयोग रहता था।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों ह्न ऐसी हमारी मंगल भावना है।

जैन पत्रकार सम्मेलन सम्पन्न

इन्दौर : अ. भा. जैन पत्र-सम्पादक संघ के तत्त्वावधान में २४ अगस्त को जैन पत्रकार सम्मेलन आयोजित किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि विश्व हिन्दू परिषद् के महामंत्री श्री हुकमचंदजी सांवला थे। अध्यक्षता पत्र सम्पादक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रवीन्द्र मालव ने की। संघ के महामंत्री श्री अखिल बंसल ने विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की। संघ की नई कार्यकारिणी को प्रो. वृषभप्रसाद जैन लखनऊ द्वारा शपथग्रहण सम्पन्न कराई गई। डॉ. अनुपम जैन सम्पादक ह्न अर्हत वचन द्वारा स्वागत भाषण के उपरान्त वक्ताओं ने जैन पत्रकारों के समक्ष उपस्थित चुनौतियों और उनके निराकरण हेतु सुझाव दिये। सभा का संचालन डॉ. महेन्द्र मनुज ने किया। समारोह में लगभग ६० पत्रकारों की रिकार्ड उपस्थिति दर्ज की गई।

इस अवसर पर डॉ. राजेन्द्रकुमार बंसल की कृति 'संयम साधक साधु' एवं अखिल बंसल की कृति 'आओ जानें जैनधर्म' का विमोचन किया गया।

स्लिपडिस्क रोगी ध्यान दें !

सम्पूर्ण उपचार बिना दवा, बिना कसरत, बिना चीरफाड, बिना आराम किए विश्व की नवीनतम तकनीक माइक्रो एक्यूप्रेशर द्वारा शीघ्र उपचार।

डॉ. पीयूष त्रिवेदी (मो.) 09828011871

गोल्ड मेडलिस्ट, बी.ए. एम.एस., एम.डी. (एक्यू.)

डिप्लोमा इन योगा, सुजोक (मास्को) एफ.ए.आर.सी. एस. (लंदन)

मेडिनोवा पोली क्लीनिक, केसरगढ, जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर

समय : सायं 6 बजे से 9 बजे तक, रविवार को प्रात: 8 से 12 बजे तक

नोट – एक्यूप्रेशर सेवा समिति द्वारा 300 से अधिक नि:शुल्क शिविर आयोजित।

अन्य रोग : जोडों का दर्द, गर्दन का दर्द, मोटापा, मायोपैथी, मानस विकृतियां, मधुमेह तथा उच्च रक्तचाप आदि की सफल चिकित्सा।

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का ह्न

तीसवाँ राष्ट्रीय अधिवेशन

(रविवार, दिनांक 12 अक्टूबर 2008)

यह अधिवेशन आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर के अवसर पर जयपुर में होने जा रहा है, जिसमें फैडरेशन द्वारा अभी तक किये गये कार्यों की समीक्षा एवं आगामी कार्यक्रमों की योजना पर विचार किया जायेगा। अधिवेशन में अधिक से अधिक सदस्यों की उपस्थिति प्रार्थनीय है।

आगामी कार्यक्रम

नई दिल्ली : यहाँ आत्मसाधना केन्द्र में भगवान महावीरस्वामी के निर्वाण महोत्सव के उपलक्ष्य में रविवार, २६ अक्टूबर से बुधवार, २९ अक्टूबर तक अनेक कार्यक्रम सम्पन्न होंगे। जिसमें मुमुक्षु समाज के अनेक मूर्धन्य विद्वानों का मंगल सानिध्य प्राप्त होगा। सम्पूर्ण कार्यक्रम बाल ब्र. पण्डित जतीशचंदजी शास्त्री के निर्देशन में सम्पन्न होंगे।

न्याय से कमाओ ! विवेक से खर्च करो !! संतोष से रहो !!!

(world of diamond gold & silver jewellery)

भव्य शुभारंभ - गुरुवार, **9** अक्टूबर, **08** को

सांईबाबा बैकरी के सामने, सराफा बाजार, इतवारी, नागपुर,मो. 09860140111

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

4 अक्टूबर, 2008	मंगलायतन यूनिवर्सिटी	राष्ट्र विकास में धर्म
5 से 14 अक्टूबर	जयपुर	शिक्षण शिविर
25 से 29 अक्टूबर	देवलाली	महावीर निर्वाणोत्सव
2 नवम्बर, 2008	इन्दौर	शिलान्यास ढाई द्वीप
6 से 13 नवम्बर	जयपुर	सिद्धचक्र विधान
28 नव. से 3 दिस.	अहमदाबाद (चैतन्यधाम)	पंचकल्याणक
7 से 14 दिसम्बर	बुन्देलखण्ड यात्रा	युवा फैडरेशन यात्रा
20 से 26 दिसम्बर	फिनिक्स (यू.एस.ए.)	पंचकल्याणक
30 व 31 दिसम्बर	मुम्बई	अधिवेशन-पत्रकार संघ

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.

प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा,** डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)

प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -

ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

फोन : (0141) 2705581, 2707458

E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127